08 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनूभूति

समानता से समीप आत्मा की अनुभूति

➢➢ मूल वतन और स्थूल वतन में बाबा के साथ समीपता का अनुभव

➳ _ ➳ दिव्य बुद्धि के नेत्र द्वारा मैं आत्मा स्वयं को परमधाम में बिंदी रूप में देख रही हूं

→ मैं दिव्य प्रकाश पुंज सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा के साथ मूल वतन में हूं

→ बाबा की शक्तिशाली किरणों में स्वयं को लहराता हुआ अनुभव कर रही हूं

■ मैं बाबा के साथ अति समीपता का अनुभव करती अतींद्रिय सुख -शांति का अनुभव कर रही हूं

■ परमधाम में मैं और मेरा बाबा संग- संग है

➳ _ ➳ सतयुगी सृष्टि में साकार के साथ समीपता का अनुभव

→ मैं परमात्म सनेही आत्मा स्थूल वतन में देवताई शरीर धारण करती हूं

→ मैं राजघराने में श्रेष्ठ पद पाने वाली देव आत्मा हूं

→ लक्ष्मी नारायण की राजधानी में मैं आत्मा देवी परिवार में राज्य भाग्य की अधिकारी हूं

→ ताज और तख्त की अधिकारी हूं

→ विश्व महाराजन लक्ष्मी नारायण के संग मैं आत्मा राज्य दरबार में विराजमान हूं

■ चारों और राज्य दरबार की शोभा को देख रही हूं

■ हर कर्म में राज्य घराने के अति समीप संबंध में आने वाली मैं देवी परिवार की अति विशेष आत्मा हूं

■ विश्व महाराजन लक्ष्मी नारायण के संग संग खाना, उठना, बैठना, रास करना !वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य

➳ _ ➳ 84 का चक्र पूरा कर मैं आत्मा पारट बजाते -बजाते अपने अंतिम जन्म में आ पहुंची हूँ

→ इस अंतिम जन्म में मैं ब्राह्मण आत्मा हूं

→ ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा की संतान मैं ब्रह्माकुमारी हूं

→ शिव बाबा का वरसा मुझे ब्रह्मा बाबा द्वारा मिल रहा है

→ इस ब्राह्मण जीवन में मैं हर पल बाप दादा की छत्रछाया के नीचे सेफ हूं

→ अपनी दिनचर्या में अमृतवेले से लेकर रात्रि तक हर करम में बाबा मेरा साथी है

- बाबा से हर गुण और शक्ति को लेकर जीवन में धारण करती मैं बाप समान आत्मा हूं
- हर पल परमात्मा प्राप्तियों के नशे में रहने वाली मैं अधिकारी आत्मा हूं
- इसी अधिकार की स्मृति से अतींद्रिय सुख- शांति का अनुभव कर संपन्न बनती जा रही हू